★ लोक संगीत ★

(1) गायन शैलियां
(2) संगीत जीवी जातियां
(3) संगीत संस्थान
(4) संगीत की राग
(5) संगीत यंत्र / वाद्ययंत्र
(6) संगीत ग्रंथ
(7) संगीत घराने

★ गायन शैलियां ★

- RJ में कुल 5 गायन शैलियां विकसित हुई।

[1] माण्ड गायन शैली ⇒

- इस गायन शैली का उद्भव - 10वी. - 11वी. शैली में जैसलमेर से माना जाता है।

सर्वाधिक लोकप्रिय → जैसलमेर - बीकानेर क्षेत्र

- राजा - महाराजाओं के आश्रय में इस गायन शैली विकास।
- मेहमानों के स्वागत एवं उनके मनोरंजन हेतु इस शैली में गीत गाए जाते हैं।

प्रसिद्ध कलाकार ⇒

(1) अल्लाह जिल्लाह बाई ⇒ बीकानेर निवासी

- महाराजा गंगासिंह के दरबार में माण्ड गायन का कार्य।

गुरु- उस्ताद हुसैन चाँद बक्श लंगड़ेवाला

- 1982 - पद्मश्री

- 2003 - 5 रु० का डाक टिकट

- 2012 - राज० रत्न

उपनाम → " मरु भूमि की कोकिला "

- राज्य गीत " केसरिया बालम " को सर्वाधिक बार गाकर अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

(2) बतुल बेगम ⇒

जन्म → नागौर

कर्मस्थली → जयपुर

- माण्ड गायन व भजन गायन से सम्बन्धित।

8 March 2022 → नारी शक्ति अवार्ड by राष्ट्रपति

28 April 2025 → पद्म श्री

(3) बन्नो बेगम → जयपुर

(4) जमीला बानो → जोधपुर

(5) परवीना मिर्जा → जयपुर

(6) नन्ही बाई → खेतड़ी

→ कृष्ण भक्त + माण्ड गायिका

Lehrnidea.in

(7) मांगी बाई ⇒ उदयपुर

↳ केसरिया बालम को प्रथम बार गाया।

(8) गवरी बाई ⇒ पाली - जोधपुर

(9) गवरी देवी ⇒ बीकानेर

↳ "★ RJ की कोकिला"

(10) अली महोम्मद व गनी महोम्मद - 2 पुरुष कलाकार का सम्बन्ध वर्तमान में। ↳ बीकानेर

[2] तालबन्धी गायन शैली ⇒

- औरंगजेब के दरबार से विस्तापित कलाकारों द्वारा विकसित गायन शैली (17वीं. सदी)।
- पुर्वी RJ में → सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर

मुख्य वाद्ययंत्र → नगाड़ा

- पहले से रचित गीतों को समुह में गाना तालबन्धी गायन कहते हैं।

[3] हवेली गायन शैली ⇒

मुख्य केन्द्र → नाथद्वारा

- बंद कमरो में गीत गाने की शैली।
- इस शैली के अधिकांश गीत कृष्ण भक्ति से सबंधित होते हैं।
- वर्तमान RJ के अधिकांश संतसंग जागरण इसी गायन शैली में होते हैं।

मुख्य वाद्ययंत्र → हारमोनियम

[4] लंगा गायन शैली ⇒

मुख्य केन्द्र → बालोतरा व बाड़मेर

लगा जाति का मुल स्थान → बड़वाना गांव, बालोतरा

इस गायन का मुख्य गीत → निबुंडा

वाद्ययंत्र → सारंगी व सितारा

प्रसिद्ध कलाकार → (1) महरदीन
(2) करीम खाँ
(3) अनवर खाँ (2022- पद्म श्री)
(4) आसीन खाँ

[5] मांगणियार गायन शैली ⇒

स्रोत: → सिंध प्रान्त

RJ में → जैसलमेर क्षेत्र

मुख्य वाद्ययंत्र → (1) कामायचा
(2) खड़ताल

मुख्य गीत → मुमल

- मांगणियार जाति द्वारा विकसित इस शैली में 6 राग व 36 रागिनियां उपलब्ध होती हैं।
- वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक प्रसिद्धी प्राप्त गायन शैली।
- प्रसिद्ध कलाकार ⇒ (1) ठापु खां भाडली
(2) साकर खाँ (कामयचा)
(3) सद्दीक खाँ मांगणियार (खड़ताल का जादुगर)
(4) रुकमा देवी

★ RJ की संगीत जीवी जातियां ★

- वह जातियाँ जिन्होंने संगीत को व्यवसाय के रूप में अपनाया।

(1) राणा ⇒

- युद्ध भूमि में नगाड़ा वाद्ययंत्र में प्रयोग।

(2) भगतन ⇒

- वह वर्ग जो राजमहलों में नृत्य गायन का कार्य करते थे।

(3) भाट ⇒ वंशावलियों को संधारित रखने का कार्य।

- जोधपुर रियासत में राजपरिवार की महिलाओं की वंशावलियों हेतु "पट्टानी बही। राणी मंगा बही" का निर्माण किया गया।

(4) जोगी ⇒ यह सारंगी वाद्ययंत्र के साथ राजा भर्तृहरि, गोपीचन्द्र व भैरूजी इत्यादि के गीत गाते हैं।

(5) काथिक ⇒ इन्होंने कथक नृत्य के विभिन्न रूपों का विकास किया।

निवास → शोभासर, बीकानेर

(6) ढाढी
(7) ढोली
(8) मिरासी

→ मांगलिक अवसरो पर संगीत संबंधि कार्य

(9) भोपा ⇒ फड़ वाचन का कार्य करने वाले।

- भोपा एक जाति भी है जो बाड़मेर क्षेत्र में निवास करती है इनकी कुल देवी - "वीरातरा माता", चौहटन, बाड़मेर है।
(वांकल माता)

(10) लंगा ⇒ मुल स्थान → बड़वाना (बालोतरा)

(11) मांगणियार ⇒ जैसलमेर

(12) रजग्गा

(13) बड़वा

(14) रावल

LaunchIdea.in

☆ RT के मुख्य संगीत संस्थान ☆

(1) राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर

स्थापना → 1950, जयपुर

कार्य → संगीत को प्रोत्साहन व वाद्ययंत्र बनाने व बजाने का प्रशिक्षण।

(2) राजस्थान संगीत नाटक ~~अका~~ अकादमी, जोधपुर

स्थापना → 1957

प्रतिक चिन्ह → सुरिंदा वाद्ययंत्र

2nd grade, 2023

(3) भारतीय लोक कला मण्डल/मंदिर, उदयपुर

स्थापना → 22 Feb 1952

संस्थापक → देवी लाल सामर

मुख्य कार्य → विलुप्त होती कलाओं को सरंक्षित करना।

संरक्षण दिया → (1) कठपुतली कला
(2) भवाई नृत्य

(4) पश्चिमी सांस्कृतिक केन्द्र, 1986 उदयपुर

मुख्य केन्द्र → बागोर हवेली, उदयपुर - मुख्यालय स्थापित

- भारत सरकार द्वारा संगीत व संस्कृति को प्रोत्साहन करने हेतु स्थापित संस्थान जिनमें निम्नलिखित 5 ईकाईयाँ

शामिल है → (1) राजस्थान
(2) गुजरात
(3) महाराष्ट्र
(4) गोवा
(5) दमनदीव

(5) रूपायन संस्थान, बोरुन्दा जोधपुर

स्थापना → 1960

संस्थापक → कोमल कोठारी, कपासन

सह संस्थापक → विजयदान देथा

कार्य → विलुप्त होती कलाओं को संरक्षण
(घुड़ला नृत्य को संरक्षण)

पत्रिकाएं (प्रकाशन) → (1) मरुचक्र
(2) लोकसंस्कृति

(6) रविन्द्र रंगमच, जयपुर (1963)

(7) पारसी रंगमच, जयपुर (1879)
↳ रामप्रकाश थियेटर के नाम से लोकप्रिय

(8) भवानी नाट्यशाला, झालावाड़ (1921)

(9) सद्दीक खाँ मांगणियार लोक कला अनुसंधान संस्थान जयपुर (13 Sep 2002-03)

★ RJ की संगीत राग ★

(1) पीलु

(2) असावरी

(3) गौरमा → नविनतम संगीत राग
अविष्कार कर्त्ता – प० विश्वमोहन भट्ट

(4) सोरठ

(5) कालिंगड़ा

(6) सिंधु → वीर रस के लोक गीत.

(7) माण्ड → सबसे प्राचीन
वियोग व श्रृंगार के अधिकांश गीत

(8) मारु → प्रेम कथाओ के अधिकांश गीत

(9) देराज

(10) सारंग → दुपहर के समय गाने जाने वाली राग

Launchidea.in

★ संगीत से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रन्थ ★

(1) सामवेद → सबसे प्राचीन

(2) by राणा कुंभा ⇒

(1) संगीत राज → 5 उपकोश

(i) पाठ्य रत्न कोष

(ii) गीत रत्न कोष

(iii) नृत्य रत्न कोष

(iv) वाद्य रत्न कोष

(v) रस रत्न कोष

(2) संगीत मीमांसा

(3) संगीत सुधा

NOTE ⇒ "संगीत रत्नाकर" सारंग धर व्यास की पुस्तक है जिसपर आधारित टीका - कुंभा ने लिखी है।

(3) गीत गोविन्द ⇒ जयदेव

- इस ग्रन्थ पर आधारित 3 टीकाएं →

(1) राणा कुंभा → रसिक प्रिया

(2) मीरा

(3) ~~राणा कुंभा~~ अनुप सिंह

(4) रागमाला व रागमंजरी ⇒ पुण्डरिक विट्ठल

- मानसिंह के भाई माधव सिंह के दरबारी।

(I)

(5) संगीत रत्नाकर ⇒ सारंग धर व्यास

(6) राग रत्नाकर ⇒ राधा कृष्ण

(7) राग चन्द्रिका ⇒ भट्ट द्वारकानाथ

(8) संगीत दर्पण ⇒ दामोदर मिश्र

(9) नाट्य शास्त्र ⇒ भारतमुनि

(10) शृंगार हार ⇒ हम्मीर

★ भाव भट्ट ⇒

- यह एक प्रसिद्ध संगीत साहित्यकार थे जो अनुप सिंह के नाम से रचनाएँ लिखते थे।

Ex.- अनुप संगीत रत्नाकर
अनुप संगीत विलास
अनुप भाव मंजरी

★ सवाई प्रताप सिंह ⇒

- यह जयपुर के एक संगीत प्रेमी शासक थे जिन्हे "गंधर्व बाईसी" कहा गया।

- जयपुर में "गुणीजनखाना" की स्थापना कर संगीत को प्रोत्साहन किया।

★ रमा बाई ⇒

- कुंभा की पुत्री जिन्होंने जावर में विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया।
- यह संगीत प्रेमी होने के कारण इन्हें "वागीशवरी" कहा गया।

★ जगजीतसिंह ⇒ श्री गंगानगर निवासी

- प्रसिद्ध गजल गायक कलाकार।
- 2012 राजस्थान रत्न की घोषणा।

Launchidea.in

☆ संगीत यंत्र / वाद्य - यंत्र ☆

- वाद्य-यंत्रों की देवी → सरस्वती
- राज्य वाद्य यंत्र - अलगोजा
- सबसे बड़ा वाद्ययंत्र - दमामा / टामक
- सबसे छोटा वाद्ययंत्र - मोरचंग

→ वाद्ययंत्रों को कुल ४ प्रकार से बांटा गया है।

(1) सुषिर वाद्ययंत्र
(2) तत् वाद्ययंत्र
(3) घन वाद्ययंत्र
(4) अवनद्ध वाद्ययंत्र

[1] सुषिर वाद्ययंत्र ⇒

- वह वाद्ययंत्र जिन्हे फूंक मार कर बजाया जाता है इन्हें वायु व प्राण वाद्य भी कहते हैं।

बांसुरी
अलगोजा
पुंगी / बीन
शंख
शहनाई / नफरी
सुरणाई / टोटो
बांकिया

"तू भुल ना कर मौसम में सीन दे बने की"

(तू ↓ तुरही, भु ↓ भुंगल, ना ↓ नागफणी, क ↑ करणा, मौ ↓ मोरचंग, स ↑ सतारा, म ↓ मशक, सी ↑ सींगी, न → नड़, → मयंक)

पावरी
तारपी] - कथौड़ी जनजाति

(a) बांसुरी ⇒

अन्य नाम - नाद, वासु, वेण, मुरली व बेणी

- आदर्श बांसुरी में छिद्रों की संख्या = 7

- 5 छिद्र वाली बांसुरी - पावला

- 6 छिद्र वाली बांसुरी - रूला

प्रसिद्ध कलाकार - (1) हरि प्रसाद चौरसिया
(2) अनिल चौरसिया
(3) पन्ना लाल घोष

(b) अलगोजा ⇒ राज्य वाद्य यंत्र

- दो बांसुरीयों को जोडकर इसका निर्माण
- बाड़मेर - जैसलमेर क्षेत्र के "रणफकीरो" का मुख्य वाद्ययंत्र।
- तेजाजी के गीतों व सवारी के समय इस वाद्यंत्र का प्रयोग।
- जरीपाई गेम्स की शुरूआत अलगोजा वाद्यंत्र से होती है।

प्रसिद्ध कलाकार - (1) धोधे खाँ (अन्तर्राष्ट्रिय प्रसिद्ध)
(2) रामनाथ चौधरी, पदमपुरा जयपुर
↳ नाक से अलगोजा बजाते हैं।
(3) तगाराम भील

- एक अलगोजे में कुल सक्रीय छिद्र → 7/8

- अलगोजा RJ से बाहर आन्ध्रप्रदेश में सर्वाधिक लोकप्रिय है।

(c) नड़ ⇒

└ प्रसिद्ध कलाकार – करणा भील, जैसलमेर

↑ लम्बी मुछो के कारण गिनिज बुक में

(d) पुँगी / बीन ⇒ कालबेलिया जाति

(e) बांकिया ⇒ सरगड़ा जाति, मेवाड (पारम्परिक वाद्ययंत्र)

– 6 फीट लम्बी पीतल की नालिका से इस वाद्य का निर्माण।

(f) नागफणी ⇒

– इस वाद्य को सन्यासी वाद्य की संज्ञा।

(g) मोरचंग ⇒

→ RJ का "ज्युप हॉर्प"

→ RJ का सबसे छोटा वाद्य

→ इस वाद्य को देखकर युरोपिय लोग कहते है कि "राजस्थान के लोग तो अपनी मुछे भी बजा सकते है।"

प्रसिद्ध कलाकार – (1) गफुर खान

(H) मशक ⇒

- चमड़े के थैले पर नलिकाएं लगाकर इस वाद्य का निर्माण करवाया जाता है।
- राजस्थान पुलिस एवं भारतीय सेना के ~~मुख्य~~ Band का मुख्य वाद्यंत्र।
- धार्मिक स्थलों पर भैरुजी के भोपे इसका USE करते हैं।
- RJ से बाहर ईरान में यह वाद्य लोकप्रिय है।
- मशक का जादूगर → श्रवण कुमार

(I) शहनाई ⇒

अन्य नाम → नफरी

- शीशम की लकड़ी से निर्मित चिलमनुमा आकृति का वाद्य।
- कुल छिद्र की संख्या = 8
- सुषिर वाद्यंत्रों में श्रेष्ठ वाद्यंत्र है।
- मांगलिक अवसरों पर सर्वाधिक प्रयोग में लिया जाने वाला वाद्य यंत्र।

Launchidea.in

- प्रसिद्ध कलाकार → (1) उस्मान घनी

(2) उस्ताद चांद खाँ

(3) मांगी बाई

(4) उस्ताद बिस्मिल्ला खान

↳ 2001 – भारत रत्न

(J) सुरणाई / तोतो / छहनाई ⇒

- शहनाई जैसी आकृति वाला वाद्य जिसके प्रसिद्ध वादक - पेपे खाँ है।

(K) पुंगल ⇒ रणभेरी वाद्य

(L) सतारा ⇒ S = A + B + C

सतारा = अलगोजा + बांसुरी + शहनाई

(M) सींगी ⇒ बारहसिंगा के सींग से निर्मित।

Launchidea.in

[2] तत् वाद्य यंत्र ⇒

- वह वाद्ययंत्र जिनमें तारों के टकराने से ध्वनि की उत्पत्ति होती है।

" एक बार सुन्दर तोते ने रावण जी की दुकान

एक	बार	सुन्दर	तोते	ने	रावण	जी	की	दुकान
↓	↓	↓	×	×	↓	↓	↓	↓
एकतारा, दोतारा, चौतारा	रबाब, रवाज	सुरिन्दा			रावणहत्था	जंतर, गुजरी	कीरिया or सुरमण्डल	दुकाको

चैंक की तो सारा पंगा कम हुआ सा।"

चैंक	की	तो	सारा	पंगा	कम	हुआ	सा
↓	×	×	↓	↓	↓	×	↓
चिकारा			सारंगी	भंपंग, अपंग	कामायचा		संतुर, सरोद, सितार

अन्य ⇒ वीणा, मोहनवीणा, गिटार, हारमोनियम, वायलीन इत्यादि।

(1) एकतारा ⇒

कुल तारों की संख्या = 1

- मीरा बाई व नारद जी का प्रिय वाद्य।
- इस वाद्य में गज का प्रयोग नहीं होता है। (अंगुलियों से)
- यह अति प्राचीन वाद्य होने के कारण "श्री आदिवाद्य" के नाम से लोकप्रिय।

Launchidea.in

(2) चौतारा ⇒

अन्य नाम → तानपुरा, तम्बुरा, तंदुरा, वेणो

- रामदेवजी के ब्यावले गाते समय इस वाद्य का प्रयोग।

- तेरहताली नृत्य का सहायक वाद्यंत्र।

(3) रावणहत्था ⇒

- अर्द्ध कटे नारियल से इस वाद्य का निर्माण होता है।

- कुल तार - 9

- इसे बजाने हेतु "गज" का प्रयोग।

पुखावज => रावणहत्था को बजाने हेतु गज का प्रयोग होता है इस गज का तार घोड़े की पूंछ के बाल से बनता है। जिसे पुखावज कहते हैं।

- रावणहत्था वायलीन का प्रारम्भिक रूप में।

- लोक देवी -देवताओं के फड़ वाचन के समय इस वाद्ययंत्र का प्रयोग।

(4) गुजरी ⇒

- रावणहत्था का छोटा रूप।

(5) सारंगी ⇒

- सर्वाधिक तारों वाला वाद्य ।
- तार - 27
- 4 तारों का निर्माण बकरे की आंत से होता है।

प्रसिद्ध - बालोतरा, बाड़मेर व जैसलमेर में लंगा जाति का मुख्य वाद्य यंत्र ।

- इसे बजाने हेतु गज का प्रयोग होता है।
- तत् वाद्य यंत्रों में श्रेष्ठ वाद्य यंत्र है।

प्रकार → सिंधी सारंगी (सबसे छोटी)
गुजराती सारंगी (सर्वाधिक लोकप्रिय)
धानी सारंगी
डेढ़ पसली
जोगिया (अलवर व भरतपुर क्षेत्र में जोगी जाति के लोग इसका USE करते हैं)

- सारंगी वाद्ययंत्र को "कामायचा का राजा" कहते हैं।

कलाकार ⇒ (1) लाखा खान (पद्म श्री - 2022)
(2) सुल्तान खान (सारंगी का सुल्तान)
(3) आसीन खान

Q. जोगिया सारंगी किस जिले का मुख्य वाद्ययंत्र है? (PATWAR-25)

✓(A) अलवर (B) बाड़मेर

(C) बीकानेर (D) उदयपुर

Q. अलवर जिले का मुख्य वाद्ययंत्र है?

✓(a) भंपग (b) सारंगी

(c) कामयचा (d) रावणहत्था

(6) कामायचा ⇒

- सारंगी की रानी के नाम से लोकप्रिय।

- जैसलमेर जिले में मांगणियार जाति का मुख्य वाद्य यंत्र।

तार → 12 - 22 तार

- गज का प्रयोग होता है।

कलाकार ⇒ (1) दापु खां

(2) साकर खां

LaunchIdea.in

(7) रवाब ⇒ अलवर + टोंक क्षेत्र में

↳ भाट जाति द्वारा

(8) रवाज ⇒ मेवाड़ क्षेत्र में

→ राव व जोगी जाति द्वारा

↳ इसका वादन अंगुलियों के नाखुन से किया जाता है।

(9) दुकाको ⇒ भील जनजाति का वाद्य जो दिपावली पर पैरो के मध्य रखकर बजाया जाता है।

(10) सुरिंदा ⇒

- रोहिड़ा की लकड़ी से निर्मित।

तार → 10

- राज० संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर का प्रतिक चिन्ह।

(11) सुरमण्डल ⇒

अन्य नाम → वीणा कोकिला व श्री कोकिला

- धार्मिक आयोजनों के समय इसका प्रयोग।

Launchidea.in

(12) भंपग ⇒

→ अलवर जिले का मुख्य वाद्ययंत्र ।

→ राजा भृर्तहरि की लोक गाथा गाते समय जोगी जाति के लोग इसका उपयोग करते हैं।

- आकृति → डमरूनुमा

- निर्माण → आल के तुबें से एक भाग पर चमड़ा लगाकर।

- भंपग का जादुगर - जहुर खां मेवाती

अन्य - उमर फारूख मेवाती ।

Note ⇒ ~~कद्दू~~ कद्दु के तुबें से भंपग वाद्यपंत्र का निर्माण होता है जिसका प्रयोग मेवाड़ क्षेत्र में भील व गरासिया जनजाति द्वारा बजाया जाता है।

(13) जंतर ⇒

→ यह वीणा का प्रारम्भिक रूप है।

तार → 5/6

→ गज का प्रयोग नहीं।

→ देवनारायण जी की फड़ पढ़ते समय गुर्जर जाति का अविवाहित भोपा इसका उपयोग करता है।

→ मान्यतानुसार इस वाद्य का नाम लेने मात्र से 100 वैदिक मंत्रों की शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

(14) वीणा ⇒ रज्जब अली खान (तार - 5) वं राणा कुंभा

(15) मोहनवीणा ⇒ प. विश्वमोहन भट्ट (1994 ग्रेमी अवार्ड)
↳ वीणा में तारो की संख्या बढाकर (20) प. विश्वमोहन द्वारा आविष्कार। ↳ तार

(17) सितार ⇒ प. रविशंकर शर्मा व अनुष्का शर्मा

(18) संतुर ⇒ शिवकुमार शर्मा

(19) सरोज ⇒ अमजद अली खाँ
प. भीष्म केरल
अकबर अली खाँ

(20) वायलीन ⇒ सत्यदेवपंवार
श्रीमति एन राजन

(21) हारमोनियम ⇒ महमुद धौलपुरी
श्रीलाल देवड़ा

(22) चिकारा ⇒ कैर की लकड़ी से निर्मित वाद्ययंत्र

Launchidea.in

[3] अवनद्ध वाद्य यंत्र ⇒

- वह वाद्ययंत्र जिनका निर्माण चमड़ा मंढकर किया जाता है।
- इन्हें ताल वाद्य भी कहते हैं।
- अवनद्ध वाद्य से निकलने वाली ध्वनि - टेरिया कहलाती है।

डमरू	ढोल	नगाड़ा	चंग	अन्य
डमरू	ढोल	नगाड़ा	चंग	घेरा
डेरू	मांदल	माट / माटे / पाबुजी के मटके	खंजरी	तासा
डुगडुगी	ढोलक	नौबत	ढफली	
ढिल्पी	पखावज	धौंसा	ढफ / डफ	
कुण्डी	तबला	दमामा / तामक		

(1) डेरू ⇒ डमरू का वृहत रूप
- आम की लकड़ी से बनता है
- गोगाजी का प्रिय वाद्ययंत्र

(2) ढोल ⇒ लकड़ी को खोखला कर दोनों भागों पर चमड़ा लगाकर इस वाद्य का निर्माण।
- ढोल बजाने की कुल 12 शैलियाँ है मुख्य -
  - देवाल → संकट के समय
  - बारी → खुशी के समय
  - पाकना → नृत्य के समय

(3) मांदल ⇒

- मिट्टी से निर्मित ढोल
- मोलेला गाँव, राजसमंद में निर्माण।
- गवरी / राई नृत्य के समय भील जनजाति के लोग।
- रावल जाति के लोग रम्मत दिखाते समय इस वाद्य का प्रयोग। (रावलों की मादल)

V.IMP
Q. वह वाद्य यंत्र जिसकी डोरी में तनाव हेतु पखावज की तरह लकड़ी के गुटके प्रयुक्त होते हैं?

(a) मांदल (b) डेरु
(c) शहनाई (d) अलगोजा

(4) पखावज ⇒ or मृदंग

- ढोलक जैसी आकृति का वाद्य, जिसका एक मुख पतला व दुसरा मुख चौड़ा होता है।
- अवनद्ध वाद्य यंत्रों में श्रेष्ठ वाद्ययंत्र माना जाता है।
- पखावज का जादुगर → प० पुरषोत्तम दास

Laurchidea.in

(5) तबला ⇒ $\frac{1}{2}$ × पखावज = तबला

- आमिर खुसरों द्वारा खोजे गए 2 वाद्य ⇒ (1) तबला
(2) सितार

प्रसिद्ध कलाकार ⇒ (1) जाकिर हुसैन
(2) कामता प्रसाद मिश्रा

(6) नगाड़ा ⇒

- नगाड़ा लकड़ी को खोखला कर एक भाग पर चमड़ा लगाकर बजाया जाता है। इस एक भाग पर 2 उपभाग होते हैं
(1) नर व (2) मादा

- युद्धों के समय सेना के उत्साह हेतु इस वाद्य का प्रयोग होता है अत: युद्ध वाद्य के नाम से लोकप्रिय

- प्रसिद्ध कलाकार ⇒ रामाकिशन सोलंकी (जादुगर)
नाथु लाल सोलंकी
राम प्रसाद सोलंकी

(7) माठ / माटे / पाबुजी के मटके ⇒

- पाबुजी के पवाड़े पढ़ते समय।

(8) नौबत ⇒

- नगाड़े जैसी आकृति का वाद्य।
- मंदिरों में पुजा पाठ के समय प्रयोग।
- मध्यकाल में राजमहलों के दरवाजों पर महमानों के स्वागत में।

(9) चंग ⇒

- शेखावाटी क्षेत्र का लोकप्रिय फाल्गुन मास में।
- एक हाथ से पकड़कर दुसरे हाथ से बजाया जाने वाला वाद्य।

(10) खंजरी ⇒

- चंग का छोटा रूप।

(11) ढफली ⇒

- चंग जैसा वाद्य जिसके दोनो भागों पर चमड़ा लगा होता है।
- इसका प्रयोग चारबैत लोकनाट्य के समय टोंक में।

(12) ढफ / डफ ⇒

- ढफली का छोटा रूप जो मेवाड़ में प्रयोग।

ढफ का जादुगर ⇒ रोशन लाल

(13) ताशा ⇒

- परातनुमा ढोल जिसका प्रयोग मोहर्रम के अवसर पर ताजिये निकालते समय प्रयोग।

(14) घेरा ⇒

- अष्टकोणीय आकृति में निर्मित वाद्य जिसका प्रयोग रामलीला के समय प्रयोग।

[5] घन वाद्य यंत्र ⇒

- वह वाद्य यंत्र जिसका निर्माण धातु से होता है। जिन्हे आपस में टकराने / चोट करने पर स्वर की ध्वनि उत्पन्न होती है।

थाली T	घण्टी T	घुंघरू C	श्रीमण्डल C
भरनी T	घण्टा T	रमझोल C	
चिमटा / चिपिया C	वीर घण्टा T	डाण्डिया C	
घड़ा T	शान्ति घण्टा T	लेजिम C	
मंजीरा C	टनकोरी T	घुरालियो C	
झांझ C	टनकोरा T	खड़ताल C	
झालर T	कागेच्छ T	करताल C	

लेजिम, घुरालियो — गरासिया जनजाति

T - टन - टन C - छन् - छन्

Q. गाजी खान बरना व सद्दीक खां मांगणियार का सम्बन्ध किस वाद्य से है → खड़ताल
(मांगणियार → जादुगर)

→ लकड़ी के पट्टों पर गोल कटोरियां लगी होने पर करताल एवं अंग्रेजी वर्णमाला के B अक्षर के समान होने पर खड़ताल कहलाता है।

Q. कौनसा एक घन वाद्य महिला के झुमके की आकृति से समानता रखता है? → कागेच्छ

Q. कालबेलिया व गरासिया जनजाति में लोकप्रिय वाद्य जो गरासियों का बाजा कहलाता है? → घुरालियो

- लेजिम गरासिया जनजाति का एक अन्य वाद्य है।

राजस्थानी बाजा के नाम से → मशक लोकप्रिय (सुषिर)

Q. प० रामनारायण किस वाद्य से सम्बन्धित है → सारंगी

Q. रबाब वाद्य में कुल कितने तार होते हैं → 12

Q. घन वाद्य में श्रेष्ठ वाद्य ⇒ खड़ताल

★ संगीत के घराने ★

→ RJ में प्रमुख संगीतकार एवं उनके द्वारा विकसित संगीत को संगीत घराना कहलाता है।

[1] जयपुर संगीत घराना => जयपुर

जनक – भूपत खाँ / मनरंग

विशिष्ट संगीत – ख्याल

प्रसिद्ध कलाकार – मोहम्मद अली खाँ (कोठी वाले)

2 – घराने → (1) पटियाला घराना, पंजाब

↳ जनक – फतेह खाँ व अली खाँ

– टोंक नवाब ने फतेह खा व अली खा को संगीत का जनरल व करनल कहा है।

कलाकार – (1) गुलाम अली खाँ

(2) अतरौली घराना, UP

- जनक – साहेब खाँ
- कलाकार – (1) हरिसिंह (राज० के तानसेन)

  (2) मानतोल्ल खाँ (रुलाने वाला फकीर)

[2] किराना घराना ⇒ UP

जनक - बन्दे अली खाँ

कलाकार - भीमसेन जोशी
रज्जब अली खाँ
रोशन आरा बेगम
गंगु बाई हंगल

[3] अल्लाह दिया खाँ घराना ⇒ टोंक

जनक - अल्ला दिया खाँ

कलाकार - किशोरी अमोणकर

[4] सेनिया घराना ⇒ ग्वालियर

जनक → सुरत सेन

प. कलाकार → अमृत सेन

वि. संगीत → सितार व <u>ध्रुपद</u>

[5] रंगीला घराना ⇒

संस्थापक - रमजान खाँ (मियाँ रंगीला)

Laurchidea.in

★ ध्रुपद ⇒

- यह एक लोक गायिकी का प्रकार है।
- इसकी शुरुआत ग्वालियर शासक - मानसिंह तोमर के काल में हुई।
- RJ में इस गायिकी को जयपुर शासक - रामसिंह -II ने प्रोत्साहन दिया।
- पहले से रचित गीतों को समूह में गाना, ध्रुपद कहलाता है।
- इसका वाद्य → सितार
- ध्रुपद गायिकी की 4 रागें →

(1) गौहरवाणी → तानसेन, ग्वालियर

(2) खाण्डुरवाणी → सम्मोखन सिंह, उनियारा, टोंक

(3) डागुर वाणी → बृजनंद डागुर, जयपुर

(4) नौहरवाणी → श्रीचंद नौहर, जयपुर

प. कलाकार ⇒ (1) मधुभट्ट तैलंग

(2) लक्ष्मण भट्ट तैलंग (2022 भारत रत्न)

LaunchIdea.in

[6] मेवाती घराना ⇒

संस्थापक – घग्घे नजीर खां → जोधपुर महाराजा जसवन्त सिंह-II के दरबारी

प्र. कलाकार – पं० जसराज

संगीत – ध्रुपद

सवाई रामसिंह-II

↙ ↘

बहराम खाँ

↓

डागर संगीत घराना

रज्जब अली खाँ बीनकार

↓

बीनकार घराना

↳ विशिष्ट संगीत – वीणा

Launchidea.in

Q. RJ की प्रसिद्ध लंगा व मांगणियार लोक गायिकी को अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि दिलाने का श्रेय प्राप्त है ?

(a) कोमल कोठारी (b) गणपत लाल डांगी
(c) विजय दान देथा (d) देवीलाल सामर

- गणपत लाल डांगी, जोधपुर →
  - → गीगला का बापु नाम से लोकप्रिय
  - → गायन, नाट्य व संगीत का त्रिवेणी
  - → 1965 व 71 भारत-पाक युद्ध के समय दूरदर्शन पर प्रसारित नाटक "आज लड़े सुरमा जी" के लेखक।

Q. कौनसा एक संगीत राज० से सम्बन्धित है –

(a) कत्थक (b) पण्डावनी → छत्तीसगढ़ संगीत → प. कलाकार – तीजन बाई
(c) बाउले → प० बंगाल संगीत (d) भरत नाट्यम → तमिल नाडु

Launchlea.in